सरस्वती

मणिका संस्कृत व्याकरण

(कक्षा-5)

लेखिका

सुनीता सचदेव

एम०ए० (संस्कृत), बी०एड्०
सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्षा
भटनागर इंटरनेशनल स्कूल
वसंत कुंज

© New Saraswati House (India) Private Limited

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:
• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2018
Reprinted 2019, 2020

ISBN: 978-93-5272-257-0

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.
All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2MSV050SKTAB17CBN

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वद्गण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

© New Saraswati House (India) Private Limited

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रमः

खण्ड 'क'–अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

1. संस्कृत वर्णमाला–अक्षर–ज्ञानम्, स्वराः, व्यञ्जनानि।
2. मात्रा–ज्ञानम्, शुद्ध–सस्वर–संयुक्तव्यञ्जनानि।
3. वर्ण–विन्यासः एवं वर्ण–संयोजनम्।
4. विविधपुष्पाणां परिचयः।
5. प्रमुखफलाणां परिचयः।
6. विविधवर्णाः।
7. प्रसिद्धपशूनां पक्षिणां च नामानि।
8. प्रमुखवस्तूनि, मिष्ठान्नानि, परिवारस्य जनानां नामानि।
9. शब्दरूपाणि, कारकाः, विभक्तयः अकारान्तपुंल्लिङ्गशब्दाः आकारान्तस्त्रीलिङ्गशब्दाः अकारान्तनपुंसकलिङ्गशब्दाः।
10. वचनानि–एकवचनं, द्विवचनं व बहुवचनम्।
11. धातुरूप–मूलधातवः, लकारपरिचयः, लट् लकारस्य कतिचिद् धातुरूपाणि।
12. अव्यय–परिचयः।
13. वाक्य–रचना, वाच्यः, पुरुषः, कर्तृवाच्यवाक्ये कर्तृपदानां व क्रियापदानां सम्बन्धः।
    - संख्यावाचिनः शब्दाः–एकतः विंशतिपर्यन्तम्।
14. अशुद्धिशोधनम्–विभक्तिः, वचनं पुरुषानुसारञ्च।

खण्ड 'ख'–रचनात्मकं कार्यम्

15. चित्रवर्णनम्।

© New Saraswati House (India) Private Limited

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. **संस्कृत वर्णमाला** 09

(अक्षर-ज्ञानम्, स्वराः, व्यञ्जनानि, मात्रा-ज्ञानं, वर्ण-विन्यासः तथा वर्ण-संयोजनम्।)

2. **नवीनशब्दानां परिचयः** 23

(पुष्पाणि, फलानि, वृक्षाः, वर्णाः पशवः, पक्षिणः, वस्तूनि, शरीरावयवाः, मिष्ठान्नानि परिवारजनाः च)

3. **शब्दरूप-प्रकरणं एवं वचनम्** 34

(लिङ्गम्, अकारान्ताः पुंल्लिङ्गशब्दाः, आकारान्ताः स्त्रीलिङ्गशब्दाः, अकारान्ताः नपुंसकलिङ्गशब्दाः, वचनम्, कारकाः एवम् विभक्ति-परिचयः, शब्दरूप-प्रकरणम्)

4. **धातुरूप-प्रकरणम्** 57

(धातु, पुरुष, लकार, लट् लकार)

5. **पर्यायाः एवम् विपर्ययाः** 70

6. **अव्ययाः** 74

7. **वाक्य-रचना** 78

8. **संख्याः** 84

9. **अशुद्धिशोधनम्** 92

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

10. **चित्रवर्णनम्** 98

- **अभ्यास-प्रश्नपत्रम्** 102

© New Saraswati House (India) Private Limited

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. उच्चारण

- संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
- प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
- **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
- संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. लेखन

- प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
- संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
- अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
- स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
- पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

© New Saraswati House (India) Private Limited

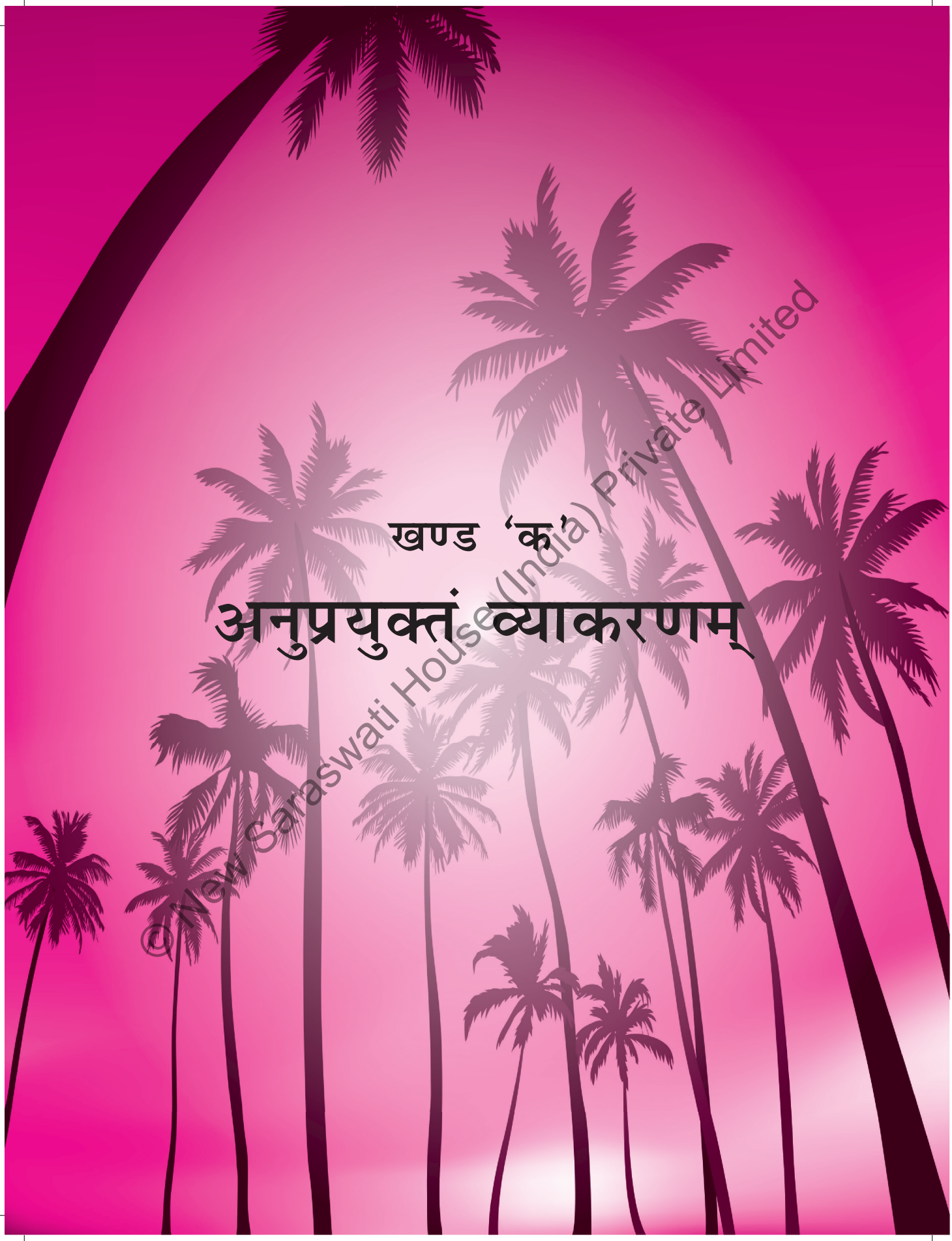

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

© New Saraswati House (India) Private Limited

© New Saraswati House (India) Private Limited

1 संस्कृत वर्णमाला

1. अक्षर-ज्ञानम्

अ = अम्बा = माँ
अनलः = आग

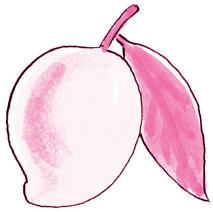

आ = आम्रम् = आम
आत्मजा = पुत्री

इ = इन्दुः = चंद्रमा
इन्द्रः = देवों का राजा/राजा

ई = ईशः = ईश्वर
ईशानः = ईश्वर/स्वामी

उ = उष्ट्रः = ऊँट
उदरम् = पेट

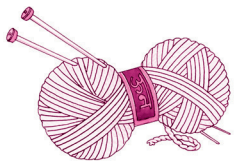

ऊ = ऊर्णः = ऊन
ऊर्मिः = छोटी लहर/तरंग

ऋ = ऋषिः = ऋषि
ऋणम् = कर्ज

ऋ = ऋकारः = 'ऋ' वर्ण

ऌ = ऌकारः = 'ऌ' वर्ण

ए = एणः = हिरण
एणकः = हिरण

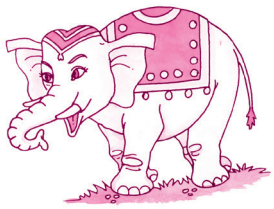

ऐ = ऐरावतः = ऐरावत हाथी
ऐश्वर्यम् = शक्ति/धन-दौलत

ओ = ओष्ठः = होंठ
ओघः = बाढ़

© New Saraswati House (India) Private Limited

औ = औदनिकः = रसोइया
औषधिः = जड़ी-बूटी

क् = कमलम् = कमल
कटः = चटाई

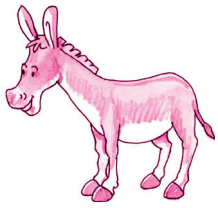

ख् = खरः = गधा
खर्जूरम् = खजूर

ग् = गंगा = पवित्र नदी
गजः = हाथी

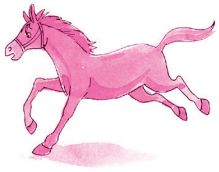

घ् = घोटकः = घोड़ा
घटः = घड़ा

ङ् = ङकारः= 'ङ्' वर्ण

च् = चटका = चिड़िया
चन्द्रः = चन्द्रमा

छ् = छत्रम् = छतरी
छात्रा = शिष्या

ज् = जननी = माता
जनः = मनुष्य

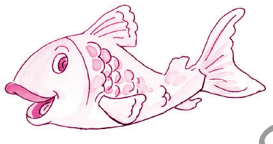

झ् = झषः = मछली
झञ्झा = आँधी

ञ् = ञकारः= 'ञ्' वर्ण

ट् = टङ्कः = कुल्हाड़ी
टिट्टिभः = टिड्डा

ठ् = ठक्कारः = ठठेरा
ठक्कुरः = ठाकुर/देवमूर्ति

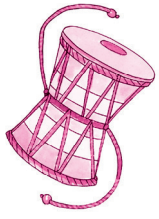

ड् = डमरुः = डमरू

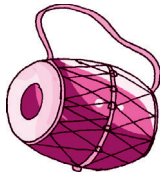

ढ् = ढक्का = ढोल
ढौलः = बड़ा ढोल

© New Saraswati House (India) Private Limited

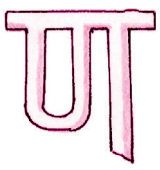

ण

थ

ण् = णकार: = 'ण्' वर्ण

त् = तरु: = पेड़

तक्रम् = मट्ठा

थ् = थकार: = 'थ' वर्ण

द् = दुग्धम् = दूध

दधि = दही

ध् = ध्वज: = झंडा

धेनु: = गाय

न् = नद: = बड़ी नदी

निम्ब: = नीम

प् = पलाण्डु: = प्याज

पताका = ध्वज

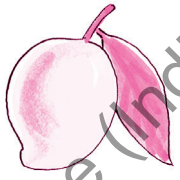

फ् = फलम् = फल

फलकम् = फट्टा/पट्टा

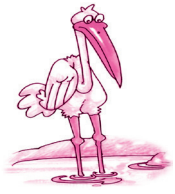

ब् = बक: = बगुला

बलाका = बगुली

भ् = भ्रमर: = भँवरा

भुजा = बाजू

म् = मोदक: = लड्डू

मण्डूक: = मेंढक

य् = यज्ञ: = यज्ञ

यति: = मुनि

र् = रज्जु: = रस्सी

रजनी = रात

ल् = लता = बेल

ललिता = सुंदर स्त्री

व् = वाटिका = बाग

वक: = बगुला

© New Saraswati House (India) Private Limited

श् = शुकः = तोता ष् = षट्पदः = भँवरा स् = सर्पः = साँप ह् = हंसः = हंस (एक पक्षी)

शंकरः = शिव सखी = सहेली हिमकरम् = फ्रिज

➲ संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर हैं।

अ	इ	उ	ऋ	ऌ	ए	ओ
आ	ई	ऊ	ॠ	–	ऐ	औ

➲ स्वर तीन प्रकार के होते हैं–1. ह्रस्व, 2. दीर्घ तथा 3. संयुक्त।

जिन्हें बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती–**स्वर** = अच् = 13

ह्रस्व = 5
जिनको बोलने में एक मात्रा का समय लगता है, वे स्वर हैं– अ, इ, उ, ऋ, ऌ

दीर्घ = 4
जिनको बोलने में दो मात्रा का समय लगता है, वे स्वर हैं–आ, ई, ऊ, ॠ

संयुक्त = 4
जो दो स्वरों को मिला कर बने हों, वे स्वर हैं–
अ + इ = ए
आ + ई = ऐ
अ + उ = ओ
आ + ऊ = औ

व्यञ्जन=हल्=जिन्हें बिना किसी स्वर की सहायता के नहीं बोला जा सकता है। वे व्यञ्जन 33 होते हैं।

कु	=	कवर्ग	=	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	स्पर्श व्यंजन
चु	=	चवर्ग	=	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टु	=	टवर्ग	=	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	
तु	=	तवर्ग	=	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पु	=	पवर्ग	=	प्	फ्	ब्	भ्	म्	
				य्	र्	ल्	व्		अन्तस्थ व्यंजन (ये कोमल व्यंजन हैं)
				श्	ष्	स्	ह्		ऊष्म व्यंजन (ये कठोर व्यंजन हैं)
				ं (अनुस्वार)		ः (विसर्ग)			स्वरों के बाद लगने वाले अयोगवाह। इन ध्वनियों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं होता।

© New Saraswati House (India) Private Limited

2. मात्रा-ज्ञानम्

हलन्ता:

हल् + अन्त = हलन्त। हल् अर्थात् व्यंजन जिस शब्द के अंत में हो उस पद को हलंत कहते हैं। इसका चिह्न है (्); यथा–'देवम्' शब्द हलंत है। शुद्ध व्यंजन अर्थात् (बिना स्वर वाले) हल् वर्णों के नीचे (्) चिह्न लगाया जाता है। स्वर मिलने के बाद इसका लोप हो जाता है;

जैसे–	क् = क्‍		ख्	= ख्‍		ग् = ग्‍		घ्	= घ्‍	
	क्‍ / क्	+	अ	= क		ग्‍ / ग्	+	उ	= गु	
	ख्‍ / ख्	+	इ	= खि		घ्‍ / घ्	+	ऋ	= घृ	

इस प्रकार अन्य उदाहरण भी देखिए :

शुद्ध व्यंजन	+	स्वर	–	मात्रा	=	सस्वर व्यंजन
क्	+	अ	–		=	क
ख्	+	आ	–	ा	=	खा
ग्	+	इ	–	ि	=	गि
घ्	+	ई	–	ी	=	घी
ङ्	+	उ	–	ु	=	ङु
फ्	+	ऊ	–	ू	=	फू

शुद्ध व्यंजन	+	स्वर	–	मात्रा	=	सस्वर व्यंजन
छ्	+	ए	–	े	=	छे
ज्	+	ऐ	–	ै	=	जै
झ्	+	ओ	–	ो	=	झो
त्	+	औ	–	ौ	=	तौ
थ्	+	ऌ	–	ॢ	=	थॢ
द्	+	ऋ	–	ृ	=	दृ
ग्	+	ॠ	–	ॄ	=	गॄ

संयुक्तव्यञ्जनानि

दो व्यंजनों के मिलने से संयुक्त व्यंजन बनते हैं।

- क् + ष् = क्ष् ; क्ष् + अ = क्ष
- त् + र् = त्र् ; त्र् + अ = त्र
- क् + य् = क्य् ; क्य् + अ = क्य
- व् + र् = व्र् ; व्र् + अ = व्र
- क् + व् = क्व् ; क्व् + अ = क्व
- ह् + ल् = ह्ल् ; ह्ल् + अ = ह्ल

© New Saraswati House (India) Private Limited

ज्	+	ञ्	=	ज्ञ ज्ञ् + अ = ज्ञ	ह्	+	र्	=	ह्र ह्र् + अ = ह्र
द्	+	व्	=	द्व द्व् + अ = द्व	स्	+	र्	=	स्र स्र् + अ = स्र
द्	+	य्	=	द्य द्य् + अ = द्य	प्	+	र्	=	प्र प्र् + अ = प्र
द्	+	ध्	=	द्ध द्ध् + अ = द्ध	श्	+	र्	=	श्र श्र् + अ = श्र
ह्	+	य्	=	ह्य ह्य् + अ = ह्य	क्	+	र्	=	क्र क्र् + अ = क्र

3. वर्ण-विन्यासः एवं वर्ण-संयोजनम्

वर्ण-विन्यासः

अक्षरों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। शब्द जिन अक्षरों से बना हो उन सबको अलग-अलग कर देना ही वर्ण-विन्यास कहलाता है; यथा–

1. अहम् = अ + ह् + अ + म्
2. अनलः = अ + न् + अ + ल् + अः
3. अनिलः = अ + न् + इ + ल् + अः
4. आम्रम् = आ + म् + र् + अ + म्
5. आश्रमः = आ + श् + र् + अ + म् + अः
6. इच्छा = इ + च् + छ् + आ

© New Saraswati House (India) Private Limited

7. ईशानः = ई + श् + आ + न् + अः
8. उपरि = उ + प् + अ + र् + इ
9. उष्ट्रः = उ + ष् + ट् + र् + अः
10. उत्तरम् = अ + त् + त् + अ + र + अ + म्
11. एषा = ए + ष् + आ
12. एतत् = ए + त् + अ + त्
13. ऐरावतः = ऐ + र् + आ + व् + अ + त् + अः
14. औषधिः = औ + ष् + अ + ध् + इः
15. अंगुष्ठः = अ + ङ् + ग् + उ + ष् + ठ् + अः
16. ऋतुः = ऋ + त् + उः
17. कक्षा = क् + अ + क् + ष् + आ
18. कलमम् = क् + अ + ल् + अ + म् + अ + म्
19. खेचरः = ख् + ए + च् + अ + र् + अः
20. खगाः = ख् + अ + ग् + आः
21. गणेशः = ग् + अ + ण् + ए + श् + अः
22. गुरुः = ग् + उ + र् + उः
23. घोटकः = घ् + ओ + ट् + अ + क् + अः
24. परमेश्वरः = प् + अ + र् + अ + य् + ए + श् + व् + अ + र् + अः
25. चमसः = च् + अ + म् + अ + स् + अः
26. छत्रम् = छ् + अ + त् + र् + अ + म्
27. जलम् = ज् + अ + ल् + अ + म्
28. झटिति = झ् + अ + ट् + इ + त् + इ
29. टीका = ट् + ई + क् + आ

© New Saraswati House (India) Private Limited

30. ठक्काराय = ठ् + अ + क् + क् + आ + र् + आ + य् + अ

31. डयनम् = ड् + अ + य् + अ + न् + अ + म्

32. ढक्काभ्याम् = ढ् + अ + क् + क् + आ + भ् + य् + आ + म्

33. तमसः = त् + अ + म् + अ + स् + अः

34. थलम् = थ् + अ + ल् + अ + म्

35. दम्पति = द् + अ + म् + प् + अ + त् + इ

36. धनाय = ध् + अ + न् + आ + य् + अ

37. नक्रेण = न् + अ + क् + र् + ए + ण् + अ

38. पुस्तकानि = प् + उ + स् + त् + अ + क् + आ + न् + इ

39. फलानि = फ् + अ + ल् + आ + न् + इ

40. बलाका = ब् + अ + ल् + आ + क् + आ

41. भयम् = भ् + अ + य् + अ + म्

42. मत्स्यस्य = म् + अ + त् + स् + य् + अ + स् + य् + अ

43. यज्ञः = य् + ज् + ञ् + अः

44. रथे = र् + अ + थ् + ए

45. लतायाः = ल् + अ + त् + आ + य् + आः

46. वक्रतुण्डः = व् + अ + क् + र् + अ + त् + उ + ण् + ड् + अः

47. शुकानाम् = श् + उ + क् + आ + न् + आ + म्

48. षट्कोणस्य = ष् + अ + ट् + क् + ओ + ण् + अ + स् + य् + अ

49. सर्पात् = स् + अ + र् + प् + आ + त्

50. हिमालयः = ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य् + अः

51. श्रमिकेषु = श् + र् + अ + म् + इ + क् + ए + ष् + उ

© New Saraswati House (India) Private Limited

पदों का विन्यास करने पर जो अक्षर अंत में होता है, उसी के नाम से वह पद जाना जाता है;

यथा– अम्बा = अ + म् + ब् + **आ** = आकारान्त
इच्छा = इ + च् + छ् + **आ** = आकारान्त
राम = र् + आ + म् + **अ** = अकारान्त
नदी = न् + अ + द् + **ई** = ईकारान्त
रवि = र् + अ + व् + **इ** = इकारान्त
बालक = ब् + आ + ल् + अ + क् + **अ** = अकारान्त
मातृ = म् + आ + त् + **ऋ** = ऋकारान्त
साधु = स् + आ + ध् + **उ** = उकारान्त
राजन् = र् + आ + ज् + अ + **न्** = नकारान्त (हलन्त)
भवत् = भ् + अ + व् + अ + **त्** = तकारान्त (हलन्त)

हम यह कह सकते हैं कि संस्कृत में अकेले वर्ण को (भाषा में चलने के लिए) कार शब्द दे दिया जाता है (

दे दी जाती है); यथा–'च' = चकार 'आ' = आकार तथा 'अ' = अकार इत्यादि।

इसी तरह अकारान्त = अ से अंत होने वाले, आकारान्त = आ से अंत होने वाले तथा इकारान्त = इ से अंत होने वाले होते हैं।

वर्ण-संयोजनम्

वर्णों को जोड़कर लिख देना वर्ण-संयोजन कहलाता है; यथा–

1. स् + ऊ + र् + य् + अ + स् + य् + अ = सूर्यस्य
2. म् + ऋ + ग् + औ = मृगौ
3. म् + अ + य् + ऊ + र् + आ + त् = मयूरात्
4. फ + अ + ल् + आ + न् + आ + म् = फलानाम्
5. व् + ऋ + क् + ष् + अ + स् + य् + अ = वृक्षस्य
6. घ् + अ + ण् + ट् + आ = घण्टा
7. त् + इ + थ् + इ + भ् + इः = तिथिभिः

© New Saraswati House (India) Private Limited

8. र् + अ + त् + न् + अ + य् + ओः = रत्नयोः

9. ज् + अ + न् + अ + न् + ई = जननी

10. ल् + अ + क् + ष् + म् + य् + ऐ = लक्ष्म्यै

11. क् + आ + क् + अ + स् + य् + अ = काकस्य

12. प् + आ + द् + आ + भ् + य् + आ + म् = पादाभ्याम्

13. अ + ज् + आ + भ् + य् + अः = अजाभ्यः

14. म् + आ + ल् + आ + य् + आः = मालायाः

15. प् + अ + त् + र् + आ + ण् + इ = पत्राणि

16. ध् + अ + र् + आ + य् + आ + म् = धरायाम्

17. व् + अ + न् + ए + ष् + उ = वनेषु

18. क् + अ + म् + अ + ल् + आ + न् + इ = कमलानि

19. श् + अ + श् + अ + क् + ए + न् + अ = शशकेन

20. श् + अ + क् + अ + ट् + ए = शकटे

21. द् + ए + व् + आ + य् + अ = देवाय

22. ख् + अ + ग् + अ + स् + य् + अ = खगस्य

23. अ + न् + न् + आ + न् + इ = अन्नानि

24. क् + अ + न् + य् + आ = कन्या

25. ज् + अ + ट् + आ + भ् + इः = जटाभिः

26. स् + अ + र् + इ + त् + आ + य् + आ + म् = सरितायाम्

27. ष् + उ + ष् + प् + ए = पुष्पे

28. क् + अ + न् + द् + उ + क् + ए + न् + अ = कन्दुकेन

29. श् + आ + क् + आ + न् + इ = शाकानि

30. च् + अ + क् + र् + अ + य् + ओः = चक्रयोः

© New Saraswati House (India) Private Limited

ध्यातव्यम्

- स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है।
- व्यंजनों को बोलने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।
- **'ऌ'** वर्ण एक स्वर है तथा इसका दीर्घ वर्ण नहीं होता है।
- उच्चारण करते समय संयुक्त वर्ण से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
- शुद्ध व्यंजनों को लिखते समय उन्हें आधा या उनके नीचे हल् चिह्न (्) लगाकर लिखना चाहिए; यथा–क = क्।
- स्वर मिल जाने पर व्यंजन अक्षर से हल् चिह्न हट जाता है; जैसे–क् + अ = क।
- संस्कृत भाषा के वर्ण-संयोग भी हमें विनम्रता सिखाते हैं; जैसे–जो वर्ण स्वरों से युक्त (य् + अ = य) और भाषा में चलने योग्य होते हैं, वे स्वर रहित अक्षरों को (र् + य = र्य) विनम्रता से शीर्ष पर उठा लेते हैं तथा स्वर युक्त वर्ण स्वयं विनम्रता से नीचे झुक जाते हैं। ठीक इसी तरह द्व = द् + व में व पूर्ण अर्थात् स्वर युक्त होने पर भी नीचे झुककर 'द्' वर्ण को अपने ऊपर स्थान देता है। सभी वर्णों में यह नियम लागू होता है। प् + र = प्र, द् + ध = द्ध, श् + र = श्र इत्यादि।
- विसर्ग अयोगवाह है, इसलिए वर्ण-विश्लेषण (विन्यास) अथवा वर्ण-संयोजन करते हुए भी इसे अंतिम स्वर के साथ ही लिखा जाएगा। उदाहरण के लिए–क् + आ + क् + अ: इस तरह से लिखना ही शुद्ध है। **क् + आ + क् + अ + :** इस प्रकार से विसर्ग को लिखना अशुद्ध हो जाएगा।
- ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है जो लगभग एक ताली बजाने जितना होता है। दीर्घ स्वरों को बोलने में दो मात्रा अर्थात् दो ताली बजाने जितना समय लगता है। प्लुत स्वरों को बोलने में तीन ताली बजाने या उससे भी अधिक का समय लगता है; यथा–पुकारते समय–**आ३गच्छ**। तीनों स्वरों को हम मुर्गे की ध्वनि से मिला सकते हैं जैसे–कु कू कूं ३।

© New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

मौखिकप्रश्नाः

I. चित्राणि दृष्ट्वा कोष्ठकगतपदेषु उचितं पदं विचित्य वदत।

(चित्रों को देखकर कोष्ठक में दिए गए पदों में से उचित पद चुनकर बताइए।)

1. (पताका/अजा)

2. 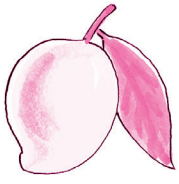 (कदलीफलम्/आम्रम्)

3. (पत्रम्/फलम्)

4. (छत्रम्/छात्रः)

5. 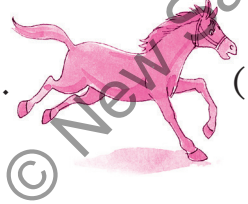 (घोटकः/घटः)

6. 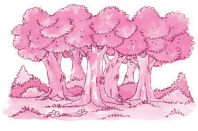 (पादपः/वनम्)

7. (छात्रा/छात्रः)

8. (गृञ्जनम्/पलाण्डुः)

9. (ठक्कुरः/ठक्कारः)

10. (मण्डूकः/सर्पः)

11. (शुकः/मृगः)

12. (कपोतः/सिंहः)

© New Saraswati House (India) Private Limited

13. 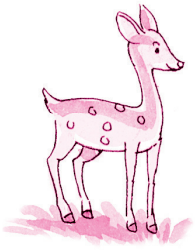 (एणः/छागः)

14. (लता/पत्रम्)

15. (झषः/मण्डूकः)

16. (चन्द्रः/तारकः)

17. (कलमम्/कमलम्)

18. 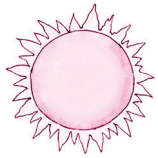 (चन्द्रः/सूर्यः)

19. (भ्रमरः/तित्तलिका)

20. (एणः/झषः)

लिखितप्रश्नाः

I. उचितं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(रिक्त स्थानों को सही विकल्प चुनकर पूरा कीजिए।)

1.	चवर्ग –	च्	छ्	ज्	.....	ञ	(झ्/छ्)
2.	टवर्ग –	ट्	ठ्	ड्	ढ्	.....	(ट्/ण्)
3.	कवर्ग –	क्	ख्	.....	घ्	ङ्	(ग्/घ्)
4.	..... –	त्	थ्	द्	ध्	न्	(तवर्ग/टवर्ग)
5.	पवर्ग –	प्	फ्	.....	भ्	म्	(ब्/व्)
6.	य्	.....	ल्	व्			(र्/ह्)
7.	श्	.....	स्	ह्			(त्र/ष्)
8.	अ	आ	.....	ई	उ	ऊ	(ऋ/इ)
9.	ऋ	ॠ	ऌ	.....	ऐ		(ऌ/ए)
10.	.....	औ					(आ/ओ)

© New Saraswati House (India) Private Limited

II. निम्नलिखितान् वर्णान् संयोज्य लिखत।

(निम्नलिखित वर्णों को जोड़कर लिखिए।)

1. क् + उ = ... (कू/कउ/कु)
2. ज् + अ = ... (जअ/जा/ज)
3. र् + आ = ... (र/रा/रआ)
4. त् + र = ... (तर्/त्र्/त्र)
5. ज् + ञ = ... (ज्य/जन्/ज्ञ)
6. द् + य = ... (द्य/दय्/द्य)
7. ह् + र = ... (हर्/ह्र/ह्र)
8. प् + र = ... (पर/प्र/र्प)
9. द् + व = ... (दव/द्व/द्व)
10. त् + ऋ = ... (त/तऋ/तृ)

III. निम्नलिखितान् वर्णान् संयोज्य उचितं पदं लिखत।

(निम्नलिखित वर्णों का संयोजन करके उचित पद लिखिए।)

1. र् + अ + च् + अ + न् + आ = ...
2. प् + इ + त् + आ = ...
3. भ् + र् + आ + त् + आ = ...
4. म् + आ + ल् + आ = ...
5. अ + म् + ब् + आ = ...
6. क् + अ + र् + उ + ण् + आ = ...
7. र् + आ + म् + आ + य् + अ + ण् + अ + म् = ...
8. ब् + आ + ल् + अ + क् + अः = ...
9. न् + अ + द् + ई + ष् + उ = ...
10. प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ = ...

IV. वर्ण-विन्यासं कुरुत।

(वर्ण-विन्यास कीजिए।)

1. दिव्या = ...
2. नियतिः = ...
3. जैसिया = ...
4. ज्योतिः = ...
5. दीपकात् = ...
6. कैलाशः = ...
7. श्रेयः = ...
8. सिद्धार्थः = ...
9. दोषः = ...
10. श्रुतिः = ...

© New Saraswati House (India) Private Limited

2 नवीनशब्दानां परिचयः

संस्कृत भाषा को समझने के लिए कुछ ऐसे संस्कृत शब्दों को जान लीजिए, जिनका प्रयोग आप दैनिक जीवन में करते हैं।

1. पुष्पाणि = फूल

1. गन्धराजः = गुलाब

2. शतपत्री = गुलाब

3. कमलम् = कमल

4. कुमुदम् = कुमुद

5. पारिजातम् = हरसिंगार

6. सूर्यावती = सूरजमुखी 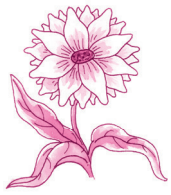

7. सुदर्शना = लिली

8. मल्लिका = बेला

2. फलानि = फल

1. आम्रम् फलराजः = आम

2. कदलीफलम् = केला

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. नारिकेलः = नारियल

4. दाडिमम् = अनार 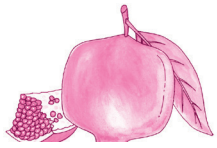

5. नारंगम् = नारंगी

6. सेवम् = सेब 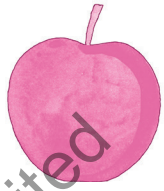

7. द्राक्षाफलम् = अंगूर

8. बिल्वम् = बेल का फल

9. मधुरजम्बीरम् = मुसम्मी

10. दृढबीजम् = अमरूद

11. जम्बूः = जामुन 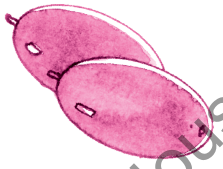

12. जम्बीरः/मातुलिङ्गम् = निम्बू

3. वृक्षाः = पेड़

1. कल्पवृक्षः = कामनाओं को पूरा करने वाला पेड़

2. अश्वत्थः = पीपल

3. अर्जुनः = अर्जुन का पेड़

4. वटः = बरगद

5. अक्षोटः = अखरोट का पेड़

6. निम्बः = नीम

© New Saraswati House (India) Private Limited

4. वर्णाः = रंग

1. कृष्णः/श्याम = काला
2. नीलः = नीला
3. पीतः = पीला
4. रक्तः = लाल
5. पाटलः = गुलाबी
6. हरितः = हरा
7. धूसरः = मटमैला
8. श्वेतः/धवलः = सफेद

5. पशवः = पशु

1. गो/धेनुः = गाय

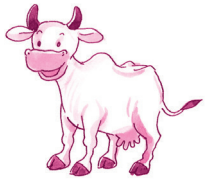

2. कुक्कुरः/शुनकः = कुत्ता

3. छागः/अजः = बकरा

4. घोटकः/अश्वः = घोड़ा

5. नकुलः = नेवला

6. मार्जारः/बिडालः = बिल्ला

7. मूषकः = चूहा

8. गजः/हस्ती = हाथी

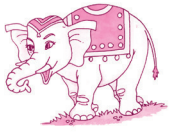

9. कपिः/वानरः = बन्दर

10. उष्ट्रः = ऊँट

11. मकर/नक्रः = मगरमच्छ

12. कच्छपः = कछुआ

13. ऊदबिडालः = ऊदबिलाव

14. महिषः = भैंसा

© New Saraswati House (India) Private Limited

15. वृषः/वृषभ = बैल 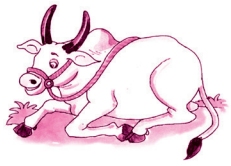

16. मृगराजः/सिंहः = शेर

17. खरः/गर्दभः/रासभः = गधा 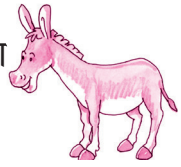

18. हरिणः/एणः/मृगः = हिरण

19. चित्रकः = चीता

20. उष्ट्रग्रीवः = ज़िराफ़

21. ऋक्षः/भल्लुकः = भालू

22. वृकः = भेड़िया

23. शशकः = खरगोश

24. शृगालः/जम्बुकः = गीदड़

25. मयुः = बारहसिंगा

6. पक्षिणः = पक्षी

1. काकः = कौआ

2. बकः/वकः = बगुला

3. मरालः/हंसः = हंस

4. मयूरः = मोर

© New Saraswati House (India) Private Limited

5. कुक्कुटः = मुर्गा

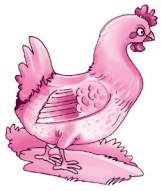

6. श्येनः = बाज

7. कपोतः = कबूतर

8. शुकः = तोता

9. चातकः = पपीहा

10. चटकः = चिड़ा
चटका = चिड़िया

11. सारिका = मैना

12. पिकः = कोयल

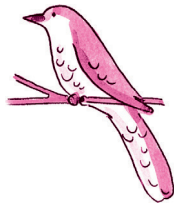

7. वस्तूनि = वस्तुएँ

1. आसन्दिका = कुर्सी

2. फलकम्/मञ्चः = मेज

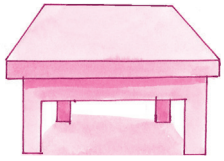

3. शरावः = प्याला

4. दण्डः = डंडा

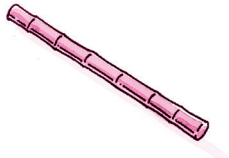

5. गेहम्/गृहम् = घर

6. शकटः = छकड़ा/
बैलगाड़ी

© New Saraswati House (India) Private Limited

7. शाटिका = साड़ी

8. कङ्कणम् = कंगन

9. केयूरम् = बाजूबंद

10. मुकुरः/दर्पणम् = शीशा

11. करण्डी/करण्डकम् = टोकरी

12. श्यामपट्टः = ब्लैकबोर्ड

13. श्वेतवर्तिका = चॉक

14. प्रोञ्छनम् = डस्टर 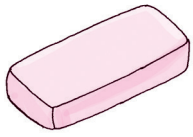

15. कक्षः = कमरा

16. व्यजनम् = पंखा 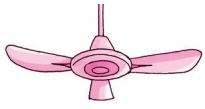

17. लेखनी = कलम

18. वायुयानम् = हवाई जहाज़

19. द्विचक्रिका = टू व्हीलर/ साइकिल 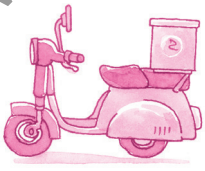

20. सरणिः = सड़क 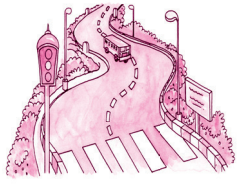

21. कूपः = कुआँ

22. भित्तिः = दीवार 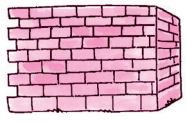

23. भित्तिचित्रम् = दीवार पर टँगा चित्र

24. मञ्जूषा = बक्सा 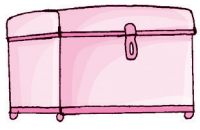

© New Saraswati House (India) Private Limited

25. आच्छादनम् = ढक्कन या ढकने का कपड़ा

26. पर्यङ्कः = पलंग

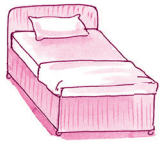

27. रोटिका = रोटी

28. मार्जकः = सफाई कर्मचारी

8. शरीरावयवाः = शरीर के अंग

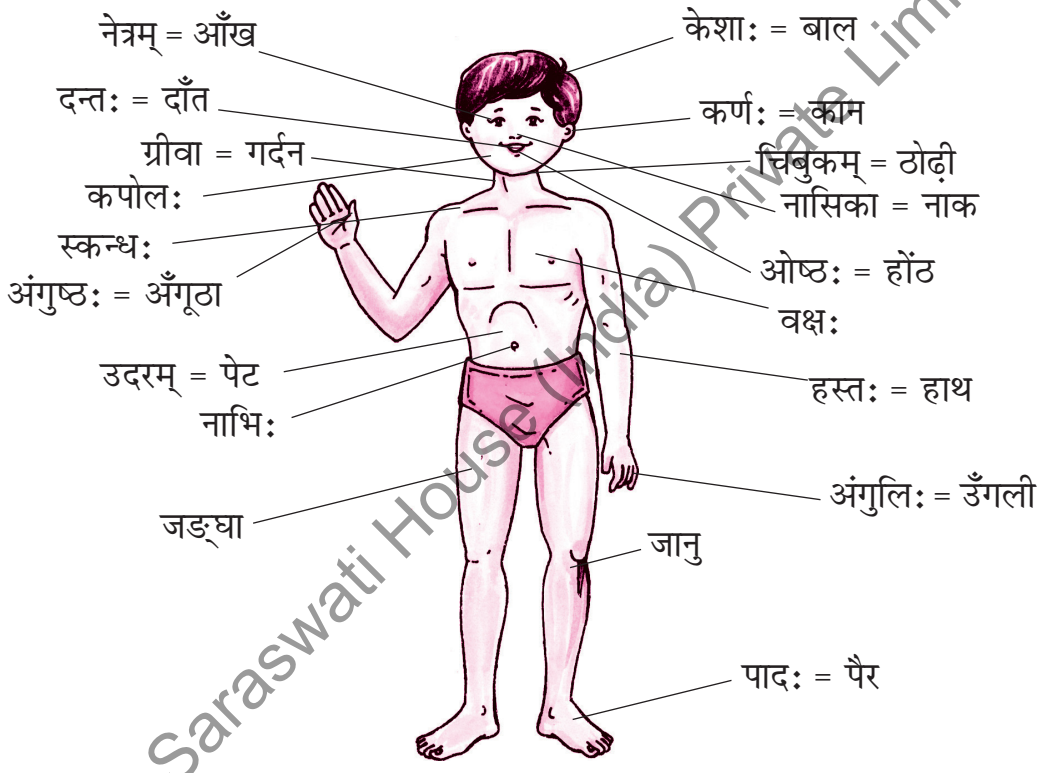

9. मिष्ठान्नानि = मिठाइयाँ

1. चक्रिका = जलेबी	2. घृतवरः = घेवर	3. यवागूः = हलवा
4. हैमी = बर्फी	5. पिंडः = पेड़ा	6. कूर्चिका = रबड़ी
7. कलाकन्दः = कलाकंद	8. रसगोलः/रसगोलकः = रसगुल्ला	9. पायसम् = खीर
10. अपूपम् = मालपुआ	11. मोदकः = लड्डू	12. मधुमण्ठः = बालूशाही

© New Saraswati House (India) Private Limited

10. परिवारजनाः = परिवार के लोग

1. माता/अम्बा/जननी	= माँ	2. जनकः/पिता	= पिता	3. पुत्रः	= पुत्र
4. अग्रजः	= बड़ा भाई	5. अग्रजा	= बड़ी बहन	6. स्वसा	= बहन
7. भ्रातृ/भ्राता	= भाई	8. पितामहः	= दादा	9. पितामही	= दादी
10. मातामहः	= नाना	11. मातामही	= नानी	12. पितृव्यः	= चाचा
13. पितृव्या	= चाची	14. मातुलः	= मामा	15. मातुलानी	= मामी
16. दुहिता/पुत्री	= बेटी	17. आवुकी	= बुआ	18. पितृस्वसृपतिः	= फूफा (बुआ के पति
19. आवुत्तः	= जीजा	20. मातृष्वसा	= मौसी	21. श्यालः	= पत्नी का भाई
22. श्यालिका	= पत्नी की बहन	23. श्वश्रूः	= सास	24. श्वशुरः	= ससुर
25. अनुजः	= छोटा भाई	26. अनुजा	= छोटी बहन	27. पुत्री	= बेटी

ध्यातव्यम्

- पुष्पम् तथा फलम् शब्द नित्य नपुंसकलिंग होते हैं। पुष्पों के सभी नाम नपुंसकलिंग में नहीं होते। यदि **'सूर्यावती'** पद है तो स्त्रीलिंग है व अर्थ होगा = सूरजमुखी, लेकिन **'सूर्यावतीपुष्पम्'** पद है तो नपुंसकलिंग है तथा अर्थ होगा = सूरजमुखी का फूल।
- सभी रंग विशेषण पद हैं तथा विशेष्य के अनुसार ही उनके लिंग, विभक्ति व वचन का प्रयोग होता है; यथा–**कृष्णः सर्पः, कृष्णा नदी** तथा **कृष्णम् मुखम्**।
- संस्कृत भाषा में स्त्रीलिंग तथा पुंल्लिंग दोनों लिंगों में शब्द होते हैं; यथा– मीनः = नर मछली, मीना–मादा मछली, चटकः = चिड़ा, चटका = चिड़िया इत्यादि।
- मस्तकम्, नेत्रम्, उदरम् नपुंसकलिंग पद हैं, इसलिए इनके रूप नपुंसकलिंग में चलेंगे तथा केशः, दन्तः, कर्णः, अंगुष्ठः, हस्तः, पादः पुंल्लिंग पद हैं, इसलिए इनके रूप पुंल्लिंग में चलेंगे और अंगुलिः, ग्रीवा तथा नासिका के रूप स्त्रीलिंग में चलेंगे, क्योंकि ये स्त्रीलिंग पद हैं।

©New Saraswati House (India) Private Limited

प्रायोगिकाभ्यासः

मौखिकप्रश्नाः

I. निम्नलिखितशब्दानां कृते संस्कृतशब्दं वदत।

(निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत शब्द बताइए।)

1. हाथी 2. रोटी 3. धोबी 4. नानी 5. कबूतर
6. बर्फी 7. मुर्गा 8. पंखा 9. भालू 10. पेट

II. निम्नलिखितपदानां लिङ्गं परिवर्त्य वदत।

(निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर बताइए।)

1. अनुजा 2. स्वसा 3. अग्रजः 4. पिता 5. मातामही
6. मातुलानी 7. पितृव्यः 8. पितामही 9. श्वश्रूः 10. श्यालः

लिखितप्रश्नाः

I. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

1. पयसम्	(क) हाथ
2. पारिजातम्	(ख) खीर
3. कूर्चिका	(ग) नारियल
4. वृकः	(घ) रबड़ी
5. दृढबीजम्	(ङ) हरसिंगार
6. दाडिमम्	(च) बेटी
7. दुहिता	(छ) अनार
8. मातुलः	(ज) भेड़िया
9. नारिकेलः	(झ) मामा
10. हस्तः	(ञ) अमरूद

© New Saraswati House (India) Private Limited

II. निम्नलिखित-वर्ग-प्रहेलिकातः षट् पुष्पाणां नामानि चित्वा लिखत।

(निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से छह पुष्पों के नाम ढूँढ़कर लिखिए।)

1. सु	र्या	कु	ती	न
द	2. म	मु	व	जः
र्श	ल्लि	द	र्या	रा
ना	का	म्	3. सू	न्ध
5. श	त	प	त्री	4. ग

संकेत

1. ऊपर से नीचे
2. ऊपर से नीचे
3. नीचे से ऊपर
4. नीचे से ऊपर
5. बायें से दायें
6. ऊपर से नीचे

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

III. निम्नलिखित-वर्ग-प्रहेलिकातः षट् फलानां नामानि चिनुत।

(निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से पाँच फलों के नाम ढूँढ़िए।)

दा	6. बि	ल्व	म्	2. द्रा	3. ना
डि	ना	र	के	क्षा	रं
मं	क	क्षा	दृ	फ	ग
1. क	द	ली	फ	ल	म्
म्	व	4. से	क	म्	म्र
नि	मः	म्	ज	बी	5. आ

संकेत

1. बायें से दायें
2. ऊपर से नीचे
3. ऊपर से नीचे
4. दायें से बायें
5. नीचे से ऊपर
6. बायें से दायें

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

© New Saraswati House (India) Private Limited

IV. निम्नलिखित-वर्ग-प्रहेलिकातः षट् पशूनां नामानि चिनुत।

(निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से छह पशुओं के नाम ढूँढ़िए।)

6. वा	न	रः	युः	गः
ऊँ	रः	क	2 3 म	कु
1. मृ	गः	च	छ	क
जः	4. छा	छ	जः	कु
5. अ	हः	पः	स	म्

संकेत

1. बायें से दायें
2. दायें से बायें
3. नीचे से ऊपर
4. नीचे से ऊपर
5. नीचे से ऊपर
6. बायें से दायें

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

V. निम्नलिखित-वर्ग-प्रहेलिकातः शरीरस्य षड् अंङ्गानां नामानि चिनुत।

(निम्नलिखित वर्ग-पहेली में से शरीर के छह अंगों के नाम ढूँढ़िए।)

च	1. उ	द	र	म्
दः	2. पा	तः	न	3. द
शा	णः	स	ति	ओ
प	ष्ठौ	4. ह	गु	ठ
क	6. ओ	का	सि	5. ना

संकेत

1. बायें से दायें
2. दायें से बायें
3. दायें से बायें
4. नीचे से ऊपर
5. दायें से बायें
6. नीचे से ऊपर

1. ..... 2. ..... 3. .....

4. ..... 5. ..... 6. .....

© New Saraswati House (India) Private Limited

3 शब्दरूप-प्रकरणम् एवं वचनम्

1. लिङ्गम्

लिंग – संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं :

पुंल्लिंग

स्त्रीलिंग

नपुंसकलिंग

प्रत्येक लिंग के अलग-अलग रूप चलते हैं। जिस अक्षर से शब्द समाप्त हो रहा है, उनके रूप अलग होते हैं। इस प्रकार **'अ'** को हम अकार भी कहते हैं तथा **'अ'** से अंत होने वाले शब्द अकारान्त (अकार + अन्त) कहलाते हैं; यथा–अज, देव, फल आदि। 'आ' से अंत होने वाले शब्द आकारान्त कहलाते हैं; यथा लता, रमा, माला इत्यादि। इसी तरह **'इ'** से अंत होने वाले शब्द इकारान्त कहलाते हैं; यथा–कवि, मुनि, रवि इत्यादि।

पुंल्लिंग – जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुंल्लिंग कहते हैं। अकारान्त पुंल्लिंग शब्दों के साथ विसर्ग लगाकर लिखा जाता है; जैसे–बालकः, देवः, रामः आदि। कुछ अकारान्त पुंल्लिंग शब्द इस प्रकार हैं :

अकारान्ताः पुंल्लिङ्गशब्दाः

1. अश्वः = घोड़ा

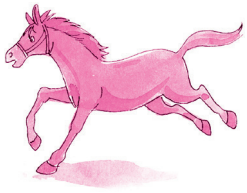

2. बालः = बालक

© New Saraswati House (India) Private Limited

3. अजः = बकरा

4. शशकः = खरगोश 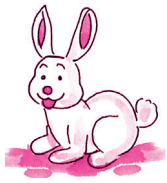

5. मेघः = बादल

6. नृपः = राजा

7. पाचकः/सूदः = रसोइया

8. वृक्षः = पेड़ 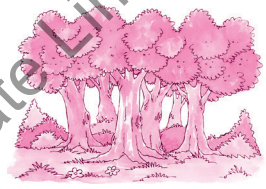

9. रजकः = धोबी

10. चणकः = चना

11. घटः = घड़ा

12. विद्यालयः = स्कूल

13. सूर्यः = सूर्य 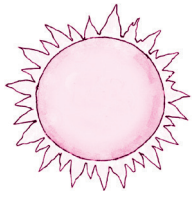

14. पादपः = पौधा 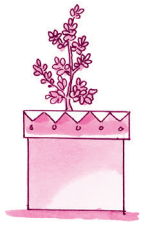

15. मृगः = हिरण

16. मरालः/हंसः = हंस

© New Saraswati House (India) Private Limited

17. सैनिकः = सिपाही

18. अनलः = आग

19. उलूकः = उल्लू

20. नकुलः = नेवला

21. बिडालः = बिल्ला

22. चन्द्रः = चाँद

23. कुक्कुरः = कुत्ता

24. कुक्कुटः = मुर्गा 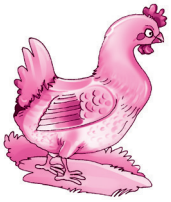

25. रासभः/गर्दभः = गधा 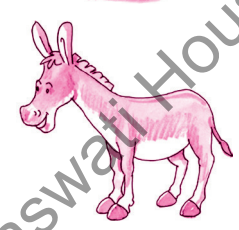

26. वानरः = बंदर

27. उष्ट्रः = ऊँट

28. इन्द्रः = एक नाम/स्वामी

29. नासिकाकरः/गजः = हाथी 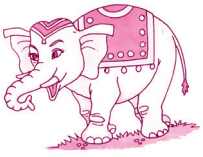

30. कोकिलः/पिकः = कोयल

© New Saraswati House (India) Private Limited